'Research Journey' International Multidisciplinary E- Research Journal
Vol. 1 Issue. 1
ISSN : 2348-7143 (Online)
Jan-March - 2014

बुध्द और उनका धम्म : २१ वीं सदी में उपयोगिता

प्रा. डॉ. कांबळे आशा दत्तात्रय
सहायक प्राध्यापक,
एस.एस.व्ही.पी.एस.महाविद्यालय
शिंदखेडा, जि.धुलिया ४२५४०६

२१ वी सदीं में भी अनेक सारे प्रश्नों को लेकर हम जी रहे हैं, क्यों महिलाएँ हर क्षेत्र में अग्रेसर होते हुए भी उसे दहेज के कारण जिंदा जलाया जा रहा है? क्यों दिन-दहाडे उसपर बलात्कार हो रहे है? क्यों हम स्त्री-भ्रुण को गर्भ में ही मार रहे है? यह कहीं न कहीं थमना चाहिए। इसलिए आज सारे विश्व को शांती से सोचने की आवश्यकता है। इसलिए आज सारे विश्व को 'युध्द की नहीं बुध्द' की आवश्यकता है।

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी भाषा,अपना साहित्य,अपनी संस्कृति तथा निजी उपलब्धियाँ होती है। यह वे उपलब्धियाँ है जिन पर वह अभिमान कर सकता है किंतु वर्तमान में जिस तीव्रता के साथ विश्वपटल पर परिवर्तन हो रहे हैं। उससे प्रत्येक राष्ट्र को उसके नागारिकों को नित्य नयी-नयी भाषाओं के ज्ञान-विज्ञान का क्षेत्र एक व्यक्ति अथवा एक राष्ट्र तक सीमित न रहकर विस्तृत हो गया है। कला, साहित्य, दर्शन, विज्ञान, तकनीक, संस्कृत आदि विभिन्न विषयों के क्षेत्र में अनेक देशों में अलग-अलग विकास हुआ है। प्रत्येक विकासशील विचारवालें व्यक्ति अथवा राष्ट्र उस ज्ञान का लाभ उठाना चाहता है किंतु उसके सामने व्यावहारिक समस्या होती है। विभिन्न भाषाओं से अनभिज्ञता की अतएवं भाषिक समस्या के समाधान के लिए उक्त ज्ञात की निजी भाषा मे परिणति अपेक्षित है। अंग्रेजी के विद्वान फरस्टोन ने अनुवाद की परिभाषा की है कि, "किसी विषय वस्तु को एक भाषा से दूसरी भाषा में अन्तरण करना अनुवाद कहलाता है।" हमारे राष्ट्र के विश्वविदीत महापुरुष, भारतीय संविधान के निर्माता परमपूज्य डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर की अंग्रेजी में लिखी मूल रचना 'The Buddha and His Dhamma' इस ग्रंथ का अनुवाद बुध्द और उनका धम्म इस पुस्तक का समीक्षात्मक आलेख आपके सामने प्रस्तुत कर रही हूँ।

डॉ.आंबेडकर ने अनेक विषयों पर अनेक पुस्तकें लिखी। उनके द्वारा लिखी विभिन्न विषयों की पुस्तके सहसा मील का पत्थर साबीत हो चुकी है। उनमें से उनका ग्रंथ 'The Buddha and His Dhamma' यह सबसे प्रसिध्द एवं सबसे महत्वपूर्ण है। उनका यह ग्रंथ उनके जीवन और कृतित्व की पराकाष्ठा है। यह एक दार्शनिक तथा ऐतिहासिक विज्ञाननिष्ठ ग्रंथ है। उनका कार्य तथा लेखन मानवता के कल्याण तथा राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत-प्रोत था।

यह ग्रंथ पुर्णतः अंग्रेजी भाषा में लिखा हुआ है। ५१० पन्नों का लिखा हुआ यह ग्रंथ आठ खंडो मे विभाजित है।

- ❖ प्रथम खंड में - गौतम किस प्रकार बोधिसत्व से बुध्द बने।
- ❖ द्वितीय खंड - धम्म दिक्षा अभियान।
- ❖ तृतीय खंड - बुध्द ने क्या शिक्षा दी ?

- ❖ चौथा खंड - धर्म और धम्म।
- ❖ पाचवा खंड - संघ।
- ❖ छठा खंड - भगवान बुध्द और उनके समकालीन।
- ❖ सातवा खंड - महान श्रमण की अंतिम चारिका।
- ❖ आठवा खंड - महामानव सिध्दार्थ गौतम की बाते बताई है।

इस प्रत्येक खंड का अनेक भागों में विभाजन किया गया है। इस ग्रंथ का लेखन डॉ. आंबेडकर ने सन १९५१ में लिखना आरंभ किया यह ग्रंथ १९५६ में लिखकर पूरा हुआ।

इस ग्रंथ के अंतर्गत बताया गयी कुछ बातें-उस समय हिमालय में असित नाम के मुनि रहते थे जब सिध्दार्थ का जन्म हुआ तो आकाश में 'बुध्द' शब्द के उच्चारण की गुंज उन्हें सुनाई दी। तब वे उसे ढुढंते हुए राजा शुध्दोधन के दरबार में आ पहुँचे जब उन्होंने उनके महल में जन्में पुत्र को देखने की इच्छा व्यक्त की तब राजा ने बताया कि बालक अभी सो रहा है। तुम्हें थोडी देर इंतजार करना पड़ेगा तब असित मुनि ने कहाँ कि, "इस तरह के दिव्य प्राणी देर तक नहीं सोते वे तो स्वभाव के ही जागरुक होते हैं और देखा तो सही में बालक जाग गया था। असित मुनि ने जब बालक को देखा तो उस बालक में बत्तीस महापुरुषों के लक्षण तथा अस्सी अनुव्यंजनाओं से युक्त अद्‌भुत दिव्य पुरुष उत्पन्न हुआ है।" उसे देखकर असित मुनिने उसका भविष्य बताया बड़ा होकर गृहस्थ रहेगा तो चकवर्ती सम्राट बनेगा। यदि गृहत्याग करेगा तो संसार के कल्याण और प्रसन्नता के लिए वह अपने धम्म सिध्दांतो की देशना करेगा। जिस धार्मिक जीवन की जिस सधम्म सिध्दांत की वह घोषणा करेगा वह आदि में कल्याणकारी होगा, मध्य में कल्याणकारी होगा तथा अंत में भी कल्याणकारी ही होगा।

असित मुनि की वाणी सही निकली उम्र की २९ वर्ष की अवस्था में सिध्दार्थ ने गृहत्याग किया। हम इतिहास में पढ़ते हैं कि, राजकुमार ने चार दृश्य देखे वृध्द, जर्जर, रोगी, प्रेत लेकिन डॉ. आंबेडकर कहते हैं कि उम्र की २९ वर्ष की अवस्था तक किसी बीमार या वृध्द व्यक्ति को देखे बिना कोई रह नहीं सकता। इसका सही कारण था शाक्य तथा कोलिय वंशो के बीच रोहिनी नदी के पानी से विवाद उत्पन्न हुआ और जब युध्द की स्थिति उत्पन्न हुयी तब सिध्दार्थ ने कहाँ कि, जहाँ तक मैं समझता हूँ धर्म तो इस बात को मानने में हैं कि, "वैर से वैर कभी शांत नहीं होता यह केवल प्रेम से ही शांत हो सकता है।" इस तरह शांती का संदेश देनेवाले तथागत ने शाक्य संघ के सेनापती के विरोध में जाकर अपना निर्णय दिया कि मैं युध्द में हिस्सा नहीं लुँगा। तब उन्हें देश से निकल जाने का आदेश दिया और सिध्दार्थ ने उसे स्विकार किया और गृहत्याग किया। "बुध्द यह मुक्ति का आश्वासन नहीं देते वे मार्गदाता हैं, मोक्षदाता नहीं। धम्म और धर्म का भेद उन्होनें बताया है" कि, धर्म यानी ईश्वर में विश्वास, आत्मा में विश्वास, ईश्वर की पूजा, गलती की दोषी आत्मा का सुधार, धर्मानुष्ठान, बलि आदि करके ईश्वर को प्रसन्न रखना धर्म कहलाता है। तो धम्म का अर्थ है - सदाचरण जो

जीवन के सभी क्षेत्र में एक आदमी का दूसरे आदमी के साथ संबंध बनाये रखना धम्म कहलाता है और आज के समाज के लिए धम्म अनिवार्य है।

डॉ.आंबेडकर इसे सितम्बर १९५६ में प्रकाशित करना चाहते थे किंतु अनेक ज्ञात कारणों सें इस महान ग्रंथ का प्रकाशन बाबासाहब के दिक्षा समारोह तक (१४ अक्तुबर १९५६) नहीं हो सका। उसके लगभग एक वर्ष पश्चात (६ दिसम्बर १९५६) के People Education Society Mumbai द्वारा 'The Buddha and his Dhamma' का अंग्रेजी भाषा में प्रकाशन हुआ।

इस पुस्तक में निहीत सामुग्री इतनी क्रांतीकारी, तर्कसंगत, प्रेरणादायी एवं विज्ञाननिष्ठ होने के कारण इस ग्रंथ के प्रति जनता की माँग को देखकर डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायनजी पर जब यह अनुवाद का काम सौंपा तब उन्होंने बड़ी शिघ्रता से इस ग्रंथ का अनुवाद कार्य किया। ऐसी स्थिति में मूल बिंदूओं का छूटना स्वाभाविक बात थी। इस ग्रंथ की सभी कमियों को दूर करने का प्रयास आचार्य जुगलकिशोर बौध्दजी के द्वारा किया गया। महोपासक शांतीस्वरुप बौध्द कहते हैं कि डॉ.आंबेडकर ने इस ग्रंथ को अपने जीवन के अंतिम काल में लिखा। उनके जीवन का सर्वश्रेष्ठ लक्ष बौध्द धम्म का ग्रहन करना था। उस काल में अछुत, शोषित एंव पिछड़ा कहे जानेवाले करोडों भावी बौध्दों के लिए विशेष रुप से बौध्द धम्म की मूल शिक्षाएँ हो इस लिए डॉ.आंबेडकर ने सभी प्रकार से आगा-पिछा सोचकर बौध्द धम्म का ग्रहन किया था। इसके माध्यम से बुध्द तथा उनकी कल्याणकारी देशना को जनसामान्य तक वे पहुँचाना चाहते थे।

इस ग्रंथ की मूल रचना को अनेक विद्वानों ने सराहा है। इसमें इंग्लैंड के बौध्द विद्वान भिक्खु संघरक्षित, श्रीलंका के प्रो.जी.पी.मलाल सेकर, बर्मा के तत्कालिन प्रधानमंत्री ऊ.नू., भारत के महापंडित राहुल सांकृत्यायन एवं डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन आदि जगप्रसिध्द मनिषियों ने इस पुस्तक का समर्थन किया।

इस ग्रंथ की लोकप्रियता इसी बात से सिध्द होती है कि, इसका प्रकाशन अनेक प्रकाशकों द्वारा अनेक भारतीय भाषाओं में किया जा रहा है। पाठकों की बढ़ती हुई संख्या के कारण यह ग्रंथ अनुपलब्ध रहता है। भारत के सिमाओं के बाहर भी कई विदेशी प्रकाशक इस पुस्तक का प्रकाशन कर रहे है। ताईवान में इस पुस्तक का कई भाषाओं में प्रकाशन करके तथा इस पुस्तक की लोकप्रियता में चार चाँद लगाने का काम किया है। कम से कम २० संस्थाओं द्वारा यह महान ग्रंथ इंटरनेट पर भी उपलब्ध करा दिया है।

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर भौतिक रुप से आज हमारे बीच में नहीं है। किंतु उनका यह ग्रंथ आज उनके होने का एहसास दिलाता है। यह ग्रंथ इतना प्रासंगिक है कि, इस ग्रंथ को यदि हम पढ़े तो हमें यह ज्ञात होता है कि, समाज में फैली असमानताएँ, विषमताएँ,युध्द की उत्पन्न स्थितियाँ खून, डकैती, बलात्कार, भ्रष्टाचार, आतंकवाद आदि बहूत से प्रश्न हमारे देश के अंतर्गत समाज के सामने उपस्थित हुए हैं। हम सोच रहे है कि यह समाज किस दिशा में जायेगा? इस समाज की कोई दिशा भी है? इस समाज को कोई दिशा दे सकता है तो वह है 'भगवान बुध्द और उनका धम्म'

यदि हम बुध्दकाल को देखते है तो इ.स.पुर्व ५६३ में सिध्दार्थ गौतम बुध्द ने बौध्द धर्म का प्रचार एवं प्रसार किया। उस समय उन्होंने महिलाओं को समानता प्रदान की थी। तथा उस काल में मातृसत्ताक कुटुंब परिवार थे। संघ के भीतर महिलाओं को दीक्षा देकर वह भी धम्म का प्रचार एवं प्रसार करती थी किंतु आज हमें समानता प्राप्त करने के लिए सांसद में महिला आरक्षण के लिए लड़ना पड़ रहा है। हमारे समाज के भीतर नैतिक मूल्यों का ऱ्हास होता हुआ दिखाई दे रहा है। हर घर में मैं और मेरा विभक्त परिवार की संकल्पना आ रही है। व्यक्ति की वृत्ती संकुचित बनती जा रही है। माँ-बाप बच्चों पर बोझ बन गये है। बच्चे उनकी जिम्मेदारी उठाने को तैयार नहीं है। इस लिए वृध्दाश्रमों की संख्या दिनों-दिन बढ़ रही है। यह बात हमारे लिए सम्मान की निश्चित रुप से नहीं है। माँ-बाप के प्रति बच्चों के मन में आत्मियता होनी चाहिए कि जिन माता-पिता ने उन्हें पाल-पोसकर बड़ा किया उनकी तन-मन-धन से सेवा करनी चाहिए।

आज हम भ्रष्टाचार रुपी संकट को झेल रहे है। इतना ही नहीं तो खून, डकैती, बलात्कार, चोरी इसका प्रमाण समाज में बहुत बढ़ा हुआ दिखाई देता है। आज समाज में व्यक्ति कही पर भी सुरक्षित नहीं है। लड़कियों की संख्या दिनों-दिन कम हो रही है। यह भयानक प्रश्न हमें सता रहे है। दहेज के लिए लडकियाँ जलाई जा रही है। इतना ही नहीं तो इन झंझटो से मुक्त होने के लिए उसे गर्भ में ही मारा जा रहा है। मानो यह आज के समाज को लगा हुआ अभिशाप है। यह कहीं ना कहीं थमना चाहिए। समाज के भीतर करुणा, मैत्री, प्रेम, भाईचारा यह भाव पनपना आवश्यक है और मुझे ऐसा लगता है कि इन सभी बातों को पाने के लिए हम सभी को बुध्द और उनका धम्म ही दिशा दे सकता है। उनका यह ग्रंथ किसी विशिष्ट धर्म का ग्रंथ नहीं है। यह एक दार्शनिक, ऐतिहासिक एवं विज्ञानपर आधारित तथा नैतिक मुल्योंपर आधारित ग्रंथ है। जिसके केंद्र में मनुष्य है। उसे इस समाज में कैसे जिना है? कैसे रहना है? समाज कैसा होना चाहिए? और समाज में जिनेवाला मनुष्य कैसा हो? उसे एक-दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करना है? इन सभी बातों से यह ग्रंथ परिपूर्ण रुप से समृध्द है।

इस ग्रंथ के अंतर्गत शील अर्थात चरित्र इसे सर्वाधिक महत्व दिया है। धम्म के भीतर उँच-नीच, छोटा-बड़ा, जाँत-पाँत इस तरह का भेद नहीं है। जिस तरह नदी की पहचान होती है। वैसे ही उस पानी को भी हम नाम देकर पहचानते है। जैसे-गंगा का पानी, यमुना नदी का पानी, गोदावरी का पानी लेकिन वह पानी जब सागर को जाकर मिलता है, तब कोई भी यह बता नहीं सकता की सागर को मिला हुआ पानी किस नदी का है। वैसे ही बुध्द का धम्म है। इसके भीतर प्रकार नहीं है, जातियाँ नहीं है।

२१ वी सदी में भी इन सारे प्रश्नों को लेकर हम जी रहे हैं क्यों महिलाएँ हर क्षेत्र में अग्रेसर होते हुए भी उसे दहेज के कारण जिंदा जलाया जा रहा है? क्यों दिन-दहाडे उसपर बलात्कार हो रहे है? क्यों हम स्त्री-भ्रुण को गर्भ में ही मार रहे है? यह कहीं न कहीं थमना चाहिए। इसलिए आज सारे विश्व को शांती से सोचने की आवश्यकता है। इसलिए आज सारे विश्व को **'युध्द की नहीं बुध्द'** की आवश्यकता है।

आधुनिक विचारक और वैज्ञानिक धम्म के बारे में उनके विचार व्यक्त करते हुए कहते है-

आर.के.जैक्सन का कहना है- "बौध्द धम्म ने स्वयं आदमी के अंदर छिपी हुई सामर्थ्य की ओर उसका ध्यान आकर्षित किया।"

ई.जी.टेलर ने अपनी पुस्तक '**Buddhism and Modern Thought**' में लिखते है- "बहुत समय से आदमी बाहरी ताकतों के शासन में रहा है। यदी उसे सच्चे अर्थ में सभ्य बनना है तो उसे अपने ही नियमों द्वारा अनुशासित रहना सिखना होगा। बौध्द धम्म ही वह प्राचीन नैतिक प्रणाली है, जिसमें आदमी को स्वयं अपना अनुशासक बनने की शिक्षा दी गई है।" इसलिए इस प्रगतिशील संसार को बुध्द धम्म की आवश्यकता है।

प्रो. ड्वाइट गोडर्ड का कथन है- "संसार के समस्त धार्मिक आचार्य में भगवान बुध्द को ही यह गौरव प्राप्त है कि उन्होंने आदमी में विद्यमान क्षमता की तात्विक महानता को पहचाना, जिसके द्वारा वह बिना किसी सहायता के स्वयं मोक्ष पथ पर अग्रेसर हो सकता है।"

प्रो. डब्ल्यू.टी.स्टेस ने लिखा है - "बौध्द धम्म ने सदा मुक्ति के लिए विद्या (प्रज्ञा) की अनिवार्यता पर विशेष बल दिया है और अविद्या तथा तृष्णा को मोक्ष प्राप्ती की असफलता का कारण बताया गया है।

अंततः बौध्द धम्म के पाली त्रिपिटक साहित्य का एक ऐसा महत्वपूर्ण ग्रंथ है जिसने संपूर्ण मानव समाज के चिंतन एवं आचरण को प्रभावित किया है। भगवान बुध्द के ४२३ गाथाओं के इस संकलन का अनुवाद संसार की सबसे अधिक भाषाओं में किया गया है, जो इसकी लोकप्रियता का परिचायक है।

संदर्भ ग्रंथ : -

१. बुध्द और उनका धम्म - डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन
२. भगवान बुध्द आणि त्यांचा धम्म - घनःश्याम तळवटकर, प्राचार्य. म.भि.चिटणीस, श.श.रेगे
३. भारतीय राजनीतिक चिन्तक डॉ. भीमराव अम्बेडकर - मनोजकुमार सिंह, शैलेशकुमार चौधरी